सुन्दर मुन्दरिए हो

अनिल धीमान

चित्र : अतनु राय

माघ महीने में संक्रांति से एक रात पहले यानी 13 जनवरी को लोहड़ी मनाई जाती है। खास तौर पर पंजाब में इस रात लोग-बाग गाँवों की चौपाल या चौक आदि में आ जुड़ते हैं। और उपलों-लकड़ियों को इकट्ठा कर एक बड़ा-सा अलाव जलाते हैं। देर रात तक वे इसके इर्द-गिर्द बैठकर गाते-नाचते हैं। जिनके यहाँ शादी-ब्याह हुआ है या बच्चा जन्मा है, वे अपने घर यह आयोजन करते हैं। गाँव-गली मुहल्ले को बुलावा भेजा जाता है। आग में तिल आदि डालकर दुआएँ माँगी जाती हैं। और फिर गुड़, तिल, मूँगफली, गजक और तिल की मिठाइयाँ वगैरह मिल-बाँटकर खाई जाती हैं।

लोहड़ी के दिन बच्चे टोलियाँ बनाकर घर-घर जाते हैं। वहाँ लोहड़ी के गीत, छन्द गाते हुए गुड़, मिठाई, मूँगफली, रेवड़ियाँ आदि इकट्ठा करते हैं। उनकी टोलियाँ लोगों से गुड़-तिल की माँग करती हुई गाती चलती हैं:

कोठी हेठ चाकू (कोठी के नीचे चाकू)
गुड़ देवे मुंडे दा बापू (गुड़ दे लड़के का पिता)
कोठी हेठ कां (कोठी के नीचे कौआ)
गुड़ देवे मुंडे दी माँ (गुड़ दे लड़के की माँ)

इस तरह न जाने कितने छन्द, हर नए साल लोक कवि रचते जाते हैं... '

अंगे-बंगे मेरे सत भरा मंगे (मेरे सात भाइयों की सगाई हुई)
एक भरा कुआँरा (एक भाई कुआँरा)
ओह कौडी खेलन वाला (वो कबड्डी खेलने वाला)
ओह कौडी किथ्थे खेड्डे (वो कबड्डी कहाँ खेले)
लाहौर शहर खेड्डे (लाहौर शहर में खेले)
लाहौर शहर उच्चा (लाहौर शहर ऊँचा)
मै मन्न पकाया सुच्चा (मैंने गुड़ की बड़ी मोटी रोटी बनाई)

लेकिन, इन सबसे लोकप्रिय है दुल्ला भट्टी नाम के एक कबीलाई सरदार की दयालुता से जुड़ा हुआ लोकगीत। दुल्ला भट्टी पाकिस्तान बनने से पहले वाले पंजाब में चिनाब-रावी के दोआब के क्षेत्र में रहता था। वह सम्राट अकबर का समकालीन था। वह एक ऐसा बहादुर कबीलाई योद्धा था जो क्रूर जागीरदारों से धन-दौलत लूटकर उन्हें गरीबों में बाँट देता था। वह एक गरीब लड़की को ज़मीदारों के अन्याय से बचाता है। और अपनी बेटी बनाकर उसकी शादी करवाता है। इसी कथा से जुड़ा है लोहड़ी का यह गीतः

सुन्दर मुन्दरिये हो
तेरा कौन विचारा हो
दुल्ला भट्टी वाला हो
दुल्ले दी धी विआही हो
सेर शक्कर आई हो
कुड़ी दे बोझे पाई हो
कुड़ी दा लाल पटाका हो
कुड़ी दा सालू पाटा हो
सालू कौन समेटे हो
चाचा गाली देसे हो
चाचे चूरी कुट्टी हो
जिमीदारा सदाओ हो
गिन-गिन पौले लाओ हो
इक पौला धुस गिआ
जिमीदार बोट्टी लै के नस्स ग्या
हो हो हो हो ...

इस तरह देर रात तक लोग माघ के सूरज की किरणों का स्वागत करने के लिए कमर कसे रहते हैं। यह वह समय होता है जब खेतों में सरसों के फूल लहलहाकर, जैसे पक रही फसल का स्वागत कर रहे होते हैं और सर्दी की ठिठुरन अपनी चरम सीमा पर पहुँच रही होती है।